

सत्य साहित्य

वर्ष 4 / अंक 4
जुलाई 2021
Year 4/ No. 4
July
2021

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

“ प्रभु जी! भूल हमें मत जाना,
 तुम पर हैं आशाएं सारी,
 हैं दर्शन उत्कण्ठा भारी,
 स्वप्नों की सुन्दर नगरी में,
 मधुर क्षणों में अरना ॥९॥

निशा निराशा जब धिर आये,
 रह रह कर मन जब आकुलीए।
 सिरव रजनी के लस में तब,
 चुपके चमक दिरवाना ॥१०॥

मानस पट पर चित्र तुम्हारा,
 ज्यों गगन में अंकित तारा।
 निशा में झिलमिल झिलमिल करता,
 गाता प्रेम तराना ॥११॥

रात्रिको स्वप्नों में देरकूं,
 दिन को मैं पलकों में रख लूं।
 उषा के शुभ आंचल में हरिजी,
 मन्द मन्द मुस्काना ॥१२॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की भजन डायरी से)

प्रार्थना के महत्त्व पर केंद्रित इस अंक में पढ़िए

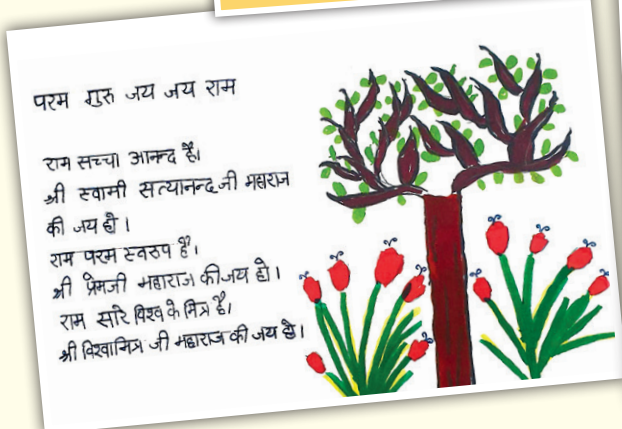
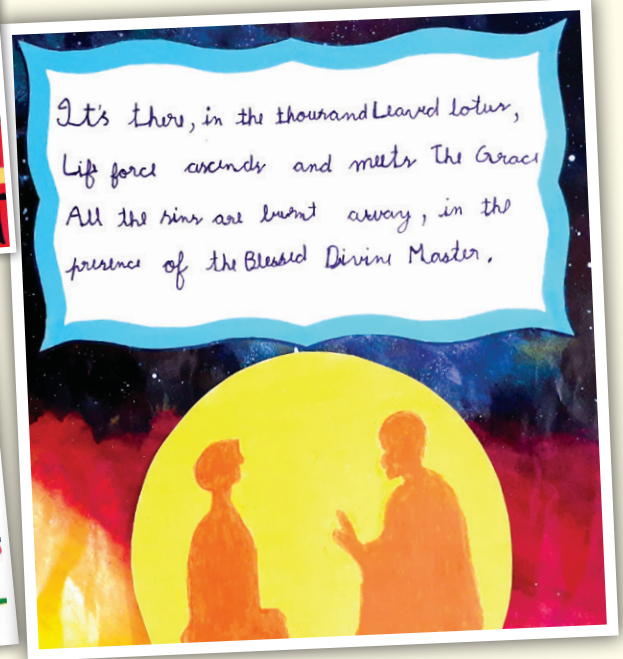
- भजन
- व्यास पूर्णिमा की बधाई
- प्रार्थना
- श्रद्धांजलि
- अनुभूति
- श्रीरामशरणम्: एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों से
- Calendar

सत्य साहित्य

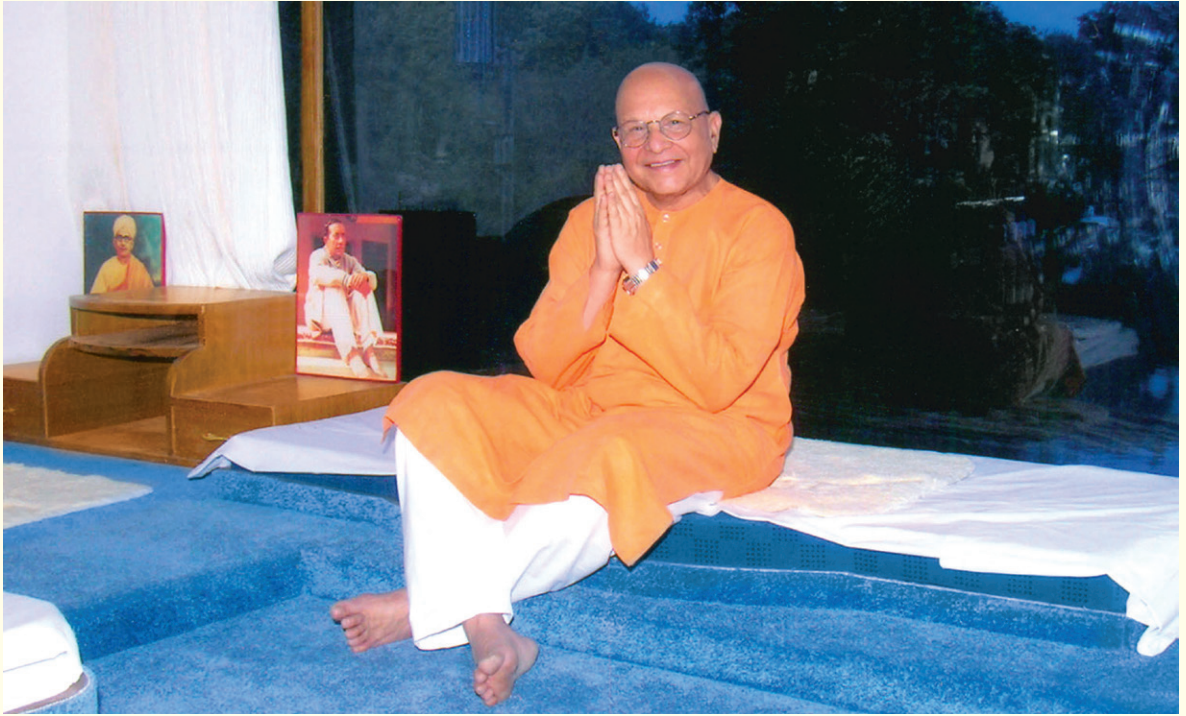
मूल्य (Price) ₹5

व्यास पूर्णिमा के शुभ अवसर पर बधाई!

Wish you a happy Vyasa Purnima.
May you ever remain blessed.
Jai Jai Ram.
J - J.



'Pray With Love'



Pray in your words.
Pray with love so that Lord listens & responds. Pray from the core of your heart. Transformation & reformation in one's life attracts others towards Ram Nam. His set example makes others also follow his path of devotion. May Prabhu Ram bless all with His abundant Grace. All love and loving.

Jai Jai Ram.

अपने शब्दों में प्रार्थना कीजिए। प्रीति के साथ प्रार्थना कीजिए, ताकि परमात्मा आपकी सुने। अपने अन्तःकरण से प्रार्थना कीजिए। आपके जीवन में आए परिवर्तन और बदलाव दूसरों को भी राम-नाम की ओर आकर्षित करेंगे। दूसरों के लिए आप एक उदाहरण बनें, ताकि दूसरे भी भक्ति के इस मार्ग का अनुसरण कर सकें। प्रभु राम सब पर अपनी अपार कृपा करें। सप्रेम जय जय राम।

'Pray With Absolute Faith'

सत्यानन्द

One who prays without worldly expectation should, first and foremost, have absolute faith in God, instil life in his convictions, never doubt His existence, and think that God is always close to him and inseparably united with him. Just like a person taking a dip finds that everywhere about him – above and below, right and left, before and behind - there is water and only water, so also one who prays selflessly should feel enveloped in the all-encompassing omnipresence of God.

Just like a fish swimming in water is aided by it and the wind provides momentum to the flight of the bird, similarly a prayerful person should believe that God is ever vigilant and active to help him. Such a state is called absolute faith. Such a devout believer verily abides in God. His pure thought vibrations go a long way and he is faultless. Abounding in inner strength he can, by means of such thought vibrations, silently make even a distantly situated man hale and hearty and spur him forward on the path of progress. This acme of faith comes of itself to the aspirant who continuously meditates and contemplates on the Lord, chants His name and sings His



glories. For the sake of such aspirants various types of prayers for one's own salvation, attaining supreme bliss and for selflessly making others happy and healthy have been described by saints, sages and devotees in their songs, poems and sayings.

A devotee of such faith can quietly and single-handedly spread goodness throughout the world by his resolute will; however, if a person who has not attained the state of absolute faith sends forth good prayers for someone in a distant, far-off place or the welfare of the world, his thought vibrations will not be strong and far-reaching. Like the light of a flickering lamp, he will be able to send out his vibrations only a very small distance. That no significant result can come out of it is not a very difficult matter to understand. For the same reason ritualistic worship performed in great religious festivals for social uplift and welfare of the world at large tantamounts to nothing because those praying possess very little measure of absolute faith and strength of a doubtless and determined resolve.

(*Prathna aur Uska Prabhav*, pp. 8-11) ■

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के सानिध्य में प्रार्थना

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के सत्संग का वृत्तांत महाराज जी के शब्दों में)

आज प्रातः श्री महाराज जी ने सबके लिए प्रार्थना की, “माँ, हम तेरे दरबार में आने के योग्य नहीं। तेरे दर को छोड़ कर किस दर जाऊँ मैं। सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं। यह सब राम नाम आराधन तेरी कृपा से सम्पन्न हुआ है, यह सब तेरे अर्पण है। हम अबोध बालक हैं, कुछ त्रुटियाँ हुई हों तो क्षमा करना। तू कृपा करके माया का पर्दा उठा। हमारा उद्देश्य केवल, ‘वृद्धि आस्तिक भाव की, शुभ मंगल संचार। अभ्युदय सद्धर्म का, राम-नाम विस्तार’ ही रहा है। हम अपने आपको रिझाने के लिए तेरी आरती करते हैं। तेरी कृपा सब पर हो। नाम में प्रीति हो।”

सबसे गले मिलकर प्रसाद वितरण

करके विदा ले ली।



इस बार महाराज जी ने ‘वन्दे रामं सच्चिदानन्दं’, ‘भज श्री रामं भज श्री रामं, श्री रामं भज विमल मते’ और ‘जय राम हरे, जय राम हरे, भव भय भंजन भगवान हरे’ पर खूब नृत्य किया, ऊँचे उछल-उछल कर। सब प्रेमियों ने श्री महाराज जी के साथ नृत्य किया। मैंने 12 साल में महाराज जी को ऐसे रूप में कभी नहीं देखा था। बड़ी मस्ती में आकर, ‘श्री रामशरणं वयं प्रपन्नाः’ और ‘प्रसीद देवेश जगन्निवास’ की धुनें लगाईं। सब प्रेम विभोर हो गए। महाराज ने कहा चाहे सत्संग 3 रात्रि का है, फिर भी बहुत है। प्रसाद थोड़ा ही हुआ करता है।

(महाराज जी की डायरी 29.12.1972) ■

Pray do not worry for anything. Let us pray
for all + Seek HIS Grace for everybody
May God bless you lots & lots
& lots & lots of love Prem

कृप्या किसी भी प्रकार की चिंता न करें। सबके लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर से सबके लिए कृपा माँगें। परमेश्वर आप पर कृपा करे। बहुत बहुत बहुत बहुत प्यार।



श्रद्धा और विश्वास : प्रार्थना का आधार

१०२०१।०७१

श्रद्धा की बात करने से पहले थोड़ी भगवद्भक्ति की बात करते हैं। दोनों को अलग करना बहुत कठिन है। रबिया जाति की मुस्लिम है पर संतों महात्माओं की तो कोई जाति नहीं होती। उनकी एक ही जाति कि वे संत हैं, रबिया भी ऐसी ही है। रबिया बहुत महान संत हुई हैं। आज रबिया ने किसी व्यक्ति से पूछा, “परमात्मा की बन्दगी क्यों करते हैं?” व्यक्ति ने कहा, “मैंने सुना है नरक की यातनाएँ बहुत कड़ी हैं, वे यातनाएँ, उन कष्टों—संकटों को वहाँ जा कर न सहना पड़े, इसलिए परमात्मा की भक्ति करता हूँ।” दूसरा व्यक्ति भी पास ही था, रबिया ने उससे पूछा, “क्या आप भी परमात्मा की बन्दगी

करते हो, आप क्यों करते हो?” कहा, “मैंने सुना है स्वर्ग—सुख बड़ा अनूठा है, अपार है, अथाह है, सुख ही सुख मिलता है वहाँ पर उस सुख के लिए मैं परमात्मा की भक्ति करता हूँ।”

मन ही मन रबिया सोचती है, कैसे मूर्ख व्यक्ति हैं! उन्हीं से पूछती है, “फर्ज करो कि ये स्वर्ग और नरक न हो तो क्या आप परमात्मा की भक्ति नहीं करोगे?” यहाँ रबिया हम सबको समझाती है कि परमात्मा की भक्ति सदा निष्काम होनी चाहिए, न ही किसी डर से करनी चाहिए, न ही किसी लालच से करनी चाहिए। दो शब्द हैं रबिया के कथन में हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, इन शब्दों पर गौर फरमाइएगा। कहीं

ऐसा तो नहीं कि हम इन्हीं दो शब्दों के कारण यहाँ श्रीरामशरणम् आते हैं, कहीं ऐसा तो नहीं कि इनके कारण ही हम परमात्मा की भक्ति करते हैं? डर है कहीं घर जाते हुए कुछ अनिष्ट न हो जाए। डर है कि आज जो कुछ भी करें, झूठ बोलते रहें, बेईमानी हेरा-फेरी करते रहें, चोरी करते रहें लेकिन पकड़े न जाएँ, क्या इस भय से बचने के लिए तो यहाँ 'श्रीरामशरणम्' नहीं आते? इस भय से बचने के लिए तो हम परमात्मा की भक्ति नहीं करते, मानो हम चोरी तो करते रहें, लेकिन हमें हथकड़ी न लगे, चोरी तो करते रहें पर पकड़े न जाएँ या हमें कुछ चाहिए इसलिए 'श्रीरामशरणम्' आते हैं। अपनी कामनाएँ पूर्ण करने के लिए? अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए? अपने अभावों को पूर्ण करने के लिए? या अपनी बिगड़ी बातों को बनाने के लिए? या अपने कर्मों के अनुसार जिन्दगी में जो बिगाड़ आ गए, अपने कृत्यों के अनुसार, उन बिगड़ी हुई बातों को सुधारने के लिए? हम यहाँ परमात्मा के दरबार में भक्ति, अमृतवाणी का पाठ इत्यादि इसीलिए तो नहीं करते?

रबिया की ये दोनों बातें साधकजनो, सोचने-विचारने के योग्य हैं। मेहरबानी करके यदि इन दो आश्रयों को लेकर आप परमात्मा की भक्ति करते हो तो रबिया कहती हैं यह सही नहीं है, इससे आपको भक्ति का जो अनूठा फल मिलने वाला है वह कभी नहीं मिल पाएगा। भक्ति के फल के लिए परमात्मा स्वयं कहते हैं कि मैं भक्ति के अधीन हूँ। जिस किसी जन के अन्दर, जिस किसी भक्त के अन्दर यह प्रतिष्ठित हो जाती है उसे इंसान बनाकर रखती है और जब तक मुझे, मुझ महान, मुझ विभु, विराट, महान को उसके अन्दर प्रतिष्ठित नहीं कर लेती तब तक यह भक्ति चैन नहीं लेती। इससे बढ़कर भक्ति का फल और क्या हो सकता है?

साधकजनो, सत्संग शुरु होते ही हम सात बार 'सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः' बोलते

हैं। उस वक्त यह मन्त्र बोलकर हम परमात्मा का आवाहन करते हैं। थोड़ा स्पष्टीकरण करता हूँ उस वक्त मामूली सी आवाज़ भी कानों को बड़ी खटकती है, तबले को सैट करना, ढोलक को सैट करना, बाजे को खोलना इत्यादि, उस वक्त बहुत खटकता है। आप जानो न जानो, लेकिन परमात्मा तो जानता है कि आप क्या कर रहे हो! आपको बोध दिलाता है कि वह समय है, जिस वक्त आप परमात्मा का आवाहन करते हो, परमात्मदेव! हम सब सत्संग शुरु करने जा रहे हैं, हम तेरी बन्दगी, तेरी भक्ति शुरु करने जा रहे हैं, उसके लिए आपको आमन्त्रित करते हैं, आवाहन अर्थात् आमन्त्रण। आप कभी यज्ञ, हवन के लिए बैठते हैं तो करने से पहले ब्राह्मण देवता आपसे जो काम करवाते हैं पहले देवताओं को आमन्त्रित करते हैं, "आइए! पधारिए! बैठिए! यह आपका हिस्सा है, यह गणपति जी महाराज का हिस्सा है, यह माँ का हिस्सा इत्यादि इत्यादि। सब दिए जाते हैं। जब समाप्ति होती है तो उसके बाद पूर्णाहुति देते हैं तो उससे पहले ही देवताओं का विसर्जन कर देते हैं। उनको कहते हैं। "महाराजधिराज! हमसे कोई भूल हो गई हो तो हमें क्षमा कीजिएगा। हम मन्त्रहीन हैं, सब कुछ हीन हैं, जो कुछ हमने किया है वह आपको समर्पित है। अब आप अपने-अपने निवास स्थानों को लौट सकते हैं, आपको बुलाया था अब आपको विदा करते हैं यह क्रम है कर्मकाण्ड का।

ठीक इसी प्रकार से साधकजनो अमृतवाणी पाठ शुरु करते हैं तो परमात्मा का आवाहन करते हैं, "हे सर्वशक्तिमान् परमात्मा! हम तुझे प्रणाम कर रहे हैं, तू हमारे सामने विराजमान है, हम तुझे सात बार प्रणाम करते हैं," मानो परमात्मा का आवाहन करते हैं, और फिर श्री अमृतवाणी जी का पाठ शुरु हो जाता है। किस काम के लिए किया है आपने अमृतवाणी जी का पाठ? किस काम के लिए कर रहे हैं? कोई न कोई तो मनोरथ होगा ही, कोई न

कोई तो मनोकामना होगी ही!

लेकिन स्वामी जी कहते हैं, मेहरबानी करके किसी मनोरथ के लिए 'अमृतवाणी' का पाठ न कीजिएगा—जैसे रबिया कहती है। निष्काम भाव से परमात्मा की भक्ति करो। किसी डर से, किसी लोभ से या किसी लालच से नहीं। दो बातें मुख्य, या तो आदमी 'भय' से जिसे भयभक्ति कहा जाता है, या

कुछ लोभ, लालच या कुछ चाहिए उसके लिए परमात्मा की भक्ति बन्दगी करता है।

स्वामी जी महाराज भी यही कहते हैं कि जो कोई प्रीति के कारण, भक्ति के कारण, भक्ति करता है वह विरला ही होता है। 'अमृतवाणी' पाठ हुआ, परमात्मा कहते हैं कि 'मेरा आवाहन किया है आपने! अब मुझे बताओ, आपने मुझे किस काम के लिए बुलाया है? Why have you invited me? What for? तो आप बोलते हो,

'वृद्धि आस्तिक भाव की, शुभ मंगल संचार, अभ्युदय सद्धर्म का, राम नाम विस्तार।'

आपके मन की यह इच्छा हो न हो, लेकिन स्वामी जी आपसे बुलवाते हैं। कभी न कभी तो आपको निष्कामता की आदत पड़ ही जाएगी न! सकामी तो हम हमेशा ही रहते हैं, कुछ न कुछ तो हमें हमेशा ही चाहिए होता है, लेकिन स्वामी जी महाराज आपको यहाँ सत्संग के लिए बुलाकर, यह चाहते हैं कि आप निष्काम भाव से परमात्मा के दरबार में कुछ समय के लिए बैठो। दो बार आप 'वृद्धि आस्तिक... विस्तार' बोलते हो उसके बाद थोड़ी देर के लिए चुप कर जाते हो। स्वामी जी महाराज ने वह समय ध्यान में जाने का रखा है, "परमात्म देव!

आप दूसरों की प्रार्थना पर निर्भर क्यों हो? आपमें क्या कमी है, उनमें क्या superiority है? क्या उच्च श्रेष्ठता है उनमें कि आप उन्हें कह रहे हो प्रार्थना करने के लिए? क्या आप स्वयं प्रार्थना के अधिकारी नहीं? क्या आप स्वयं परमात्मा के सम्बन्धी नहीं? क्या आप स्वयं परमात्मा के बन्दे नहीं? क्या आप स्वयं परमात्मा की भक्ति करने वाले नहीं? फिर दूसरों को क्यों कहते हो आप? आप स्वयं क्यों नहीं करते? दूसरों से आशीर्वाद किस लिए माँगते हो?

हमारा कोई मनोरथ नहीं है, हम निष्काम भाव से अमृतवाणी का पाठ कर रहे हैं, तेरी भक्ति कर रहे हैं, हमारा मनोरथ यही है। दो बार 'वृद्धि आस्तिक... विस्तार' बोलकर आप फिर परमात्मा को यह आश्वासन देते हो। यह ऊपर की बातें न हों क्योंकि भीतर तो आपको कुछ और ही चाहिए तो यह सौदा परमात्मा को मंजूर नहीं है। वह आपके

भीतर की बात बहुत अच्छी तरह से जानता है।

हाँ, आप प्रार्थना करना चाहते हो परमात्मा से तो उसके लिए अलग समय रखिएगा। उसके लिए तो आप अलग समय बैठ कर परमात्मा से प्रार्थना कीजिएगा। सामूहिक प्रार्थना के लिए भी यही सम्पुट दिया जाता है। स्वामी जी महाराज ने जो सामूहिक प्रार्थना का system शुरू किया जहाँ 5, 10 या 15 लोग बैठकर सामूहिक प्रार्थना करते हैं। अखण्ड जाप भी अपने आपमें प्रार्थना ही है, उसमें भी यही सम्पुट दिया जाता है, 'वृद्धि आस्तिक... विस्तार'। साधकजनो, है तो यह सामूहिक प्रार्थना की बैठक। जो साधक प्रार्थना के लिए बैठते हैं उनको स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि वे सामूहिक प्रार्थना के लिए ही बैठते हैं। हाँ, धीरे-धीरे व्यक्तिगत प्रार्थनाओं का भी किया जाना शुरू हो गया है, हाँ करते हैं लोग, सामूहिक प्रार्थना में भी बैठे हुए लोग करते हैं, वैसे भी करते हैं, करनी चाहिए।

देवियो और सज्जनो! आप जी को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि आप जो पत्र लिखते हैं कि आपके लिए प्रार्थना की जाए वह पत्र 'प्रार्थना कोष' में आता है। उस पत्र को प्रार्थना कोष वाले पढ़ते हैं और

उसके अनुसार परमात्मा के दरबार में आपकी अर्जी, आपकी दरखवास्त रख देते हैं। अपने भावों से, अपने शब्दों में आपकी प्रार्थना परमात्मा के दरबार में रख देते हैं। बहुत अच्छी बात है उनके लिए भी और आपके लिए भी। यदि आपका लाभ हो जाए तो इससे बढ़कर खुशी की और क्या बात हो सकती है। बहुत सुख मिलता है, चैन मिलता है, बहुत आनन्द मिलता है, जब यह खुशखबरी सुनने को मिलती है कि अमुक व्यक्ति ICU में या coma में था और साधकों ने परमात्मा के दरबार में प्रार्थना की है जिसके कारण वे coma से बाहर आ गए हैं। वह अपने घर आ गए हैं यह सुन कर बहुत खुशी प्राप्त होती है, बहुत अच्छी बात है।

साधकजनो! ऐसा क्रम ही आप जारी रख सकते हैं लेकिन आज जो मैं निवेदन करना चाहता हूँ आपकी सेवा में वह थोड़ा भिन्न है। आप दूसरों की प्रार्थना पर निर्भर क्यों हो? आपमें क्या कमी है? उनमें क्या superiority है? क्या उच्च श्रेष्ठता है उनमें कि आप उन्हें कह रहे हो प्रार्थना करने के लिए? क्या आप स्वयं प्रार्थना के अधिकारी नहीं? क्या आप स्वयं परमात्मा के सम्बन्धी नहीं? क्या आप स्वयं परमात्मा के बन्दे नहीं? क्या आप स्वयं परमात्मा की भक्ति करने वाले नहीं? फिर दूसरों को क्यों कहते हो आप? आप स्वयं क्यों नहीं करते? दूसरों से आशीर्वाद किस लिए माँगते हो? दूसरों से यह कह देते हो कि हमारे लिए प्रार्थना की जाए। आप स्वयं क्यों नहीं करते? तो क्या यह कर्तव्य से पलायन होना तो नहीं? आप अपने कर्तव्य को भूल रहे हैं। आप मेहनत नहीं करना चाहते, आप साधना नहीं करना चाहते, आप स्वयं परिश्रम नहीं करना चाहते, दूसरों से करवाना चाहते हैं। क्यों? ये एक बात है। दूसरी बात, देवियो और सज्जनो ! कहीं ऐसा तो नहीं कि आपको यह श्रद्धा और विश्वास ही नहीं है कि आपकी प्रार्थना परमात्मा द्वारा सुनी जाएगी।

इतना घोर अपराध है यह। क्यों आपके अन्दर यह सोच है? अपने अन्दर ऐसी कमी महसूस कर रहे हो कि इस कमी के कारण हमारी पुकार परमात्मा के दरबार में नहीं पहुँचती तो इस कमी को दूर करो। आप स्वयं अपने लिए, अपनों के लिए, दूसरों के लिए प्रार्थना करने वाले बनो। अपने अन्दर जो कमियाँ हैं, उन्हें दूर करो और जो सबसे बड़ी कमी है श्रद्धा एवं विश्वास की, इस कमी को पूरा कीजिएगा, खत्म कीजिएगा। अगर इनकी पुकार परमात्मा के दरबार में पहुँच सकती है तो मैं भी इन जैसा ही क्यों न बनूँ कि मेरी पुकार भी परमात्मा के दरबार में पहुँच सके, यह तो साधना हुई। यह तो मनोरथ हुआ। तो देवियो और सज्जनो, मैं आपको आश्वासन देता हूँ परमात्मा के दरबार में, जैसा मैं परमात्मा को समझ पाया हूँ, जैसा परमात्मा को शास्त्र समझ पाया है कि हम सब परमात्मा के अपने बच्चे हैं। उसके अन्दर किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं है, वह सम है। पुनः कहूँगा फर्क मात्र इतना ही है कि जो परमात्मा का भजन करता है, जो भक्ति करते हैं, वह मुझमें हैं और मैं उनमें हूँ। यह फर्क परमात्मा ने गीता जी में घोषित किया है: 'जो मेरा भजन करते हैं जो मेरी भक्ति करते हैं उनको मैं संसार में बसने नहीं देता। उन्हें मैं अपने आपमें बसा लेता हूँ।' तो ऐसा बसने वाले बनना चाहिए।

आज से शुरू करोगे, फिर श्रद्धा और विश्वास बढ़ेगा। परमात्मा से इसके लिए भी प्रार्थना करो, 'परमात्मा! मेरे अन्दर श्रद्धा और विश्वास भर दो।' यह प्रार्थना करने के बाद आप दूसरों के लिए, अपनों के लिए प्रार्थना करनी शुरू कीजिएगा।

साधकजनो, खूब डटकर कीजिएगा साधना। जीवन ही प्रार्थनामय हो जाए इससे बढ़िया जीवन और क्या होगा? मानवता का चिन्ह यही है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों को कुछ देने के योग्य हो जाता

है तो यह उसकी मानवता का प्रतीक है। जो दूसरों के लिए कुछ नहीं कर सकता, दूसरों को कुछ नहीं दे सकता उसे मानव कहने में संकोच होता है। परमात्मा ने हमें यह देह देकर जो वरदान दिया हुआ है यह इसीलिए कि आप मेरे पुत्रों की, मेरे

बन्दों की सेवा कर सकें। उनके काम आ सकें।
शुभकामनाएँ, मँगलकामनाएँ!

(परम पूजनीय महाराज जी का प्रवचन 12-6-2010)



पूज्यनीय स्वामी जी की निष्काम प्रार्थना की परम्परा

प्रातः स्मरणीय परम संत पूज्यपाद श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज एक विलक्षण, अद्वितीय प्रतिभा—सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे। एक सिद्ध सत्पुरुष, सच्चे अनुभवी, पहुँचे हुए सद्गुरु एवं महान योगी थे। आपका सम्पूर्ण जीवन प्रार्थनामय था। आप सदैव दूसरों की भलाई के लिए प्रार्थना किया करते थे जो सफल होती थी और आपको उत्तर भी मिल जाता था।

अध्यात्म जीवन में 'प्रार्थना' का सर्वोत्तम स्थान है। हमारा मार्ग प्रार्थना का मार्ग है। हमारी साधना—पद्धति में प्रार्थना को उच्च स्थान दिया गया है।

"प्रार्थना एक प्रकार से मानसिक और शारीरिक दोनों दोषों को दूर करने के लिए एक अध्यात्म—चिकित्सा है। यह हमारे अन्तःकरण के सूक्ष्मतर स्तर में जो दोष होते हैं, उनको दूर करने में अचूक औषध है।" (प्राक्कथन — प्रार्थना और उसका प्रभाव)

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने अपने जीवनकाल में ही सुपात्र शिष्य पूज्य श्री प्रेम जी महाराज को अपनी आध्यात्मिक संस्था 'रामसेवक संघ' का सदस्य बना लिया एवं उन्हें उच्च कोटि का साधक जानकर प्रार्थना करने का अधिकार प्रदान किया।

कुछ काल पश्चात् पूज्य श्री प्रेम जी महाराज की

अनन्य भक्ति, साधनामय जीवन तथा पूर्ण समर्पण भाव देखकर उन्हें नाम — दीक्षा देने का अधिकार भी प्रदान किया।

लोकहित के लिए पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने 'प्रार्थना—केन्द्र' की स्थापना करने की इच्छा प्रकट की। इस हेतु आपने हरिद्वार साधना—सत्संग (2 अप्रैल, 1958) में यह भाव व्यक्त किए "एक वर्ष के अन्दर निष्काम प्रार्थना करने के लिए पाँच—सात साधक तैयार हों ऐसा मैं चाहता हूँ। इसके लिए कुछ नियम हैं जो लिखित रूप में आ जावेंगे।" (प्रवचन पीयूष पृ. 311) इसी संदर्भ में पूज्य श्री स्वामी जी महाराज द्वारा रचित लघु ग्रंथ 'प्रार्थना और उसका प्रभाव' प्रकाशित हुआ। प्रार्थना जगत में यह लघु ग्रंथ अद्वितीय है।

प्रार्थना के इस कार्य हेतु वर्ष 1958 में ही कुछ साधकों को चुना गया। पूज्य श्री स्वामी जी ने उन्हें श्रावणी—सत्संग हरिद्वार (वर्ष 1959) में पन्द्रह दिवस के प्रशिक्षण में सम्मिलित होने का आदेश दिया। इस प्रशिक्षण में कई स्थानों के कुछ साधक सम्मिलित हुए थे। इस प्रशिक्षण के दौरान साधकों को 'प्रार्थना और उसका प्रभाव' नामक लघु ग्रंथ का अध्ययन कराया गया।

**सर्वशक्तिमय रामजी, अखिल विश्व के नाथ।
शुचिता, सत्य, सुविश्वास दे, सिर पर धर कर हाथ।।**

(पूज्य श्री स्वामी जी महाराज)

इस दोहे का अपने जीवन में दृढ़तापूर्वक पालन करने की आज्ञा दी गई। गुरु-कृपा से प्रार्थनाशील साधक 'साधन-सम्पन्न' बन गए। पूज्य श्री स्वामी जी द्वारा उनको यह आदेश दिया गया कि वे अपने निवास स्थान पर जाकर प्रति मंगलवार सायंकाल 5 से 6 बजे तक निष्काम प्रार्थना के लिए सामूहिक बैठा करें। उन्हें एक वर्ष में एक करोड़ नाम-जप का संकल्प भी दिलाया गया। इस प्रकार दिल्ली, ग्वालियर आदि स्थानों पर 'प्रार्थना-केन्द्रों' की स्थापना हुई।

इसी परम्परा को पूज्य श्री प्रेम जी महाराज अपने जीवन काल में निभाते रहे। आप स्वयं भी दिल्ली श्रीरामशरणम् में नियत समय पर प्रार्थना के लिए बैठा करते। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज कहा करते, "प्रेमनाथ जी किसी के लिए प्रार्थना करें, तो वह पूरी हो जाती है। अनुचित होने पर उन्हें आवाज आ जाती है कि यह नहीं कोई और बात करो।"

पूज्य श्री प्रेम जी महाराज प्रतिवर्ष होली पर्व पर दिल्ली में प्रार्थनाशील साधकों व रामसेवक संघ के सदस्यों की बैठक कर उन्हें उचित दिशा-निर्देश दिया करते थे।

पूज्य श्री प्रेम जी महाराज की प्रतिमूर्ति डॉ. श्री विश्वामित्र जी महाराज गुरु-पद पर आसीन हुए। आपने दिल्ली, मध्यप्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व पंजाब में नवीन "प्रार्थना-कोष" नाम से प्रार्थना-केन्द्रों की, पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के बनाए नियम व अनुशासन के अनुरूप स्थापना की। प्रार्थना करने के लिए नवीन सदस्य भी बनाए गये। पूज्य श्री महाराज जी भी प्रार्थना किया करते थे। आपकी प्रार्थना में बड़ा बल था। आपकी प्रार्थना से अनेक साधकजन लाभान्वित हुए, जो आज तक अति आभारी हैं।

इस प्रकार प्रार्थना-कार्य का विस्तार होता गया। साथ ही पूज्य श्री महाराज जी ने श्री स्वामी जी महाराज के मिशन को देश-विदेश में प्रभावी ढंग से विस्तृत किया। इस प्रकार 'प्रार्थना-कोष' सुचारु रूप से 'प्रार्थना और उसका प्रभाव' ग्रंथ के अनुरूप वर्तमान में भी कार्यशील हैं।

पूजनीय गुरुजनों के आशीर्वाद से 'सामूहिक प्रार्थना' की परम्परा आज भी नियमित रूप से जारी है।

एक वरिष्ठ साधक द्वारा प्रेषित ■

श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट और सम्पूर्ण श्रीरामशरणम् परिवार उन सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति संवेदना प्रकट करता है एवं उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करता है जो इस महामारी के शिकार हुए हैं। वे सभी साधक श्रीरामशरणम् परिवार के अति प्रिय सदस्य थे। उनकी मधुर यादें और सेवा हमें सदा स्मरण रहेगी। परमात्मा श्रीराम एवं गुरुजन उन दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करें और अपने चरणों में वास दें। उनके परिवार के सदस्यों को सांत्वना और बल प्रदान करें।

कई साधक और उनके सम्बन्धी और मित्रगण अभी भी इस व्याधि से जूझ रहे हैं। सम्पूर्ण श्रीरामशरणम् परिवार की प्रार्थनाएँ उनके साथ हैं। श्रीरामशरणम् परिवार के सदस्य अनेक केन्द्रों पर उनके पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए श्री अमृतवाणी पाठ व नाम-जाप कर रहे हैं। परमात्मा श्री राम से हम उनके सुस्वास्थ्य की मंगल कामना करते हैं।

निवेदक: श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट ■

'Illimitable Love'

As I sat down to pen my experiences with Pujniya Shree Maharaj Ji, the process was like piecing together distant memories to form a whole: some parts of which you possess, while other are presented to you with time in the form of thoughts and experiences of those around you. He was someone whose love and acceptance were unconditional, who knew what you wanted or were feeling even before you could express it. Giving a name to the relationship I shared with Him is difficult, but if I have to pick one, it would probably be closest to that of a friend.

Maharaj Ji is part of my early experiences and hence, most of my corporeal memories of Him are from childhood. While I was lucky enough to experience numerous instances of His unbounded love, one of the instances that I distinctly recall is from when I was five or six years old. Much to my parents' plight I used to quietly run up to Maharaj Ji's room every Sunday after Satsang. I would wait outside His room, for him to come and take me inside. Every time He used to meet me with the biggest of smiles and always used to ask about everyone back home. Each time before leaving, He used to give me a handful of toffees and used to say '*niche sabko dena.*' After this continued consecutively, my parents concerned, that I was wasting Maharaj Ji's time, asked me to only visit His room when invited. I reluctantly obliged and did not show up to meet Him the following Sunday. In the succeeding Sunday Satsang, when He was headed back to His room, He saw me standing with my mother in the corner, raised His hand and said '*aaja aaja.*' He took me in the lift to His room. Another incident clearly etched in my memory of Maharaj Ji's illimitable love which also highlights His jovial nature, is also from my childhood. I

always wanted to celebrate my birthday with Him, however the dates coincided with Satsang and hence, I never could. Coincidentally there was an exception this one year, when He was in Delhi and I was determined to meet Him. My parents enquired if we could seek blessings and the reply from Him was '*chocolate cake le kar aana.*' My mother forced me into wearing a suit against my resistance, in which I wasn't really comfortable. The moment we entered Maharaj Ji's room, He looked at me and said '*yeh suit mummy ne zabardasti pehnaya na?*' I nodded in agreement and He started laughing. He called me to sit next to Him, wished me happy birthday and asked me about school. This was something He regarded as extremely important. I cut the '*chocolate cake*' with Him and put a small piece in His mouth....

I was of course too young to realize the blessings I was showered with. It is only now, that I am able to partly fathom the significance of these experiences and how His love and Kripa reflect in almost every milestone I achieve or the challenges I face. Maharaj Ji took me with Him on his evening walk once after dinner. He held his mala in His right hand and my hand with His left. After we completed one round, He stopped walking and asked if I wanted to take another one. It was only after I nodded that He started walking again, giving me the agency to make the decision. Again, while this happened in my early childhood, I think about this incident every time I need to make an important decision. It feels like He is right there standing next to me and guiding me. Now when I hear narratives of other sadhaks' experiences I realize the countless number of ways in which everyone associates with Him, piecing together their own form of Divine from a memory that's just for them to preserve. ■

श्रीरामशरणम् शनाग, मनाली : एक ऐतिहासिक विवरण

(‘श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण’ के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)



पूज्य श्री महाराज जी पहली बार वर्ष 1988 में अपनी साधना हेतु मनाली में पधारे थे।

पूज्य श्री महाराज जी ने मनाली के समीप (Log Huts) नामक शांत एवं एकांत स्थान पर श्रीमती रूलदी देवी (मामी जी) के कुटियानुमा घर (वर्तमान में श्री रामशरणम् मनाली) पर साधना आरंभ की। अपनी साधना काल के दौरान पूज्य श्री महाराज जी उन्हें ‘मामी’ कह कर ही संबोधित करते थे।

उस समय आसपास एवं मामी जी के परिचित लोग उन्हें ‘डॉक्टर साहब’ से संबोधित करने लगे! महाराज जी वहां अमृतवाणी का भी पाठ करने लगे धीरे धीरे आसपास के लोग और मामी जी के परिवार के लोग शामिल होते गये।

इसी दौरान महाराज जी ने मामी जी से उनके मायके यानी कि शनाग जो कि मनाली से 4km दूरी पर रोहतांग रोड

नेहरू कुंड के समीप व्यास नदी के वाम तट पर स्थित एक छोटा सा गांव है देखने की इच्छा व्यक्त की और उसी वर्ष महाराज जी ने शनाग गाँव में अपने पग धरे। शुरु में तो मामी जी के माईके में और लोगों के घर आँगन में महाराज जी ने सत्संग करना शुरु कर दिया। अनेक वर्षों तक मामी जी के माईके मे ही सत्संग होता रहा। धीरे-धीरे गाँव के और भी बहुत से लोगों ने जुड़ना आरंभ किया। इस दौरान महाराज जी का तिलक वर्ष 1993 में दिल्ली में हुआ। महाराज जी हर साल मनाली एक दो महीने के प्रवास में आते रहे व शनाग भी नियमित आते रहे।

श्री राम

श्रीरामशरणम् शनाग काउद्घाटन
१५ जून १९९७ तदानुसार ज्येष्ठ (शुक्ल-
पक्ष) दशमी २०५४ रविवार के शुभ
दिन परम श्रेष्ठ स्वामी विश्वामित्रजी
महाराज के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

कभी पैदल कभी कच्चे रास्तों से पहाड़ी नदी जो गाँव के समीप से बहती है पर बने अस्थायी पुल से अनगिनत बार पधारे हैं।

धीरे धीरे साधकों की संख्या बढ़ती गई और एक समय



ऐसा आया कि शनाग गाँव के प्रत्येक घर से लोग दीक्षित हो गए। फिर महाराज जी ने मामी जी की ही जमीन पर श्री रामशरणम् बनवाने की अनुमति प्रदान की और फिर परमेश्वर की कृपा तथा स्थानीय साधकों एवं श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट नई दिल्ली के सहयोग से इस 'प्रेम सदन' श्री रामशरणम् शनाग का विधिवत निर्माण कार्य वर्ष 1996 में शुरू किया गया जो कि वर्ष 1997 में पूर्ण रूप से बन कर तैयार हो गया।

श्री रामशरणम् शनाग का उद्घाटन 15 जून 1997 तदनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी 2054 रविवार के शुभ दिन परम श्रद्धेय डॉ विश्वामित्र जी महाराज जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

पूज्य श्री का इस गांव के साथ बहुत प्रेम रहा है अपने मनाली प्रवास के दौरान महाराज जी सिर्फ इसी गांव में एक रात्री विश्राम एवं एक दिवसीय सत्संग करने के लिए मनाली से यहां आते रहे हैं, क्योंकि मामी जी भी मनाली श्री रामशरणम् के निर्माण के समय से अपने जीवन के अंतिम दिनों तक और पूज्य श्री की आज्ञा अनुसार शनाग में ही रहीं। महाराज जी उनके दर्शन एवं एक दिवसीय सत्संग हेतु यहाँ वर्ष में कभी-कभी दो बार भी आते रहे हैं।

यहां के प्राकृतिक चश्मे से उत्पन्न पीने का पानी उन्हें इतना पसंद था कि इस पानी को वे मनाली Log Huts में प्रतिदिन कुछ सौभाग्यशाली साधकों को लाने के लिये कहा करते।

परम पिता परमात्मा एवं गुरु जनों का ही प्रताप है कि इस गांव के 90 फीसदी लोगों ने राम नाम की दीक्षा ली हुई है और आते जाते यहां का बच्चा हो, नौजवान हो या माताएं, बहनें, बुजुर्ग सभी राम राम जी कहते हुए अपना काम काज करते रहते हैं। यहां तक कि कोई प्रवासी मजदूर भी क्यूँ न हो यहां कुछ समय रहने के पश्चात् वो भी 'राम राम' करने लग जाते हैं। ऐसा प्रताप है गुरुजनों का!

यों तो पूज्य श्री की बहुत सी ऐसी यादें है इस गांव के साथ लेकिन सभी का जिक्र यहां सम्भव नहीं है।

धन्य हैं हम शनाग वासी जिनको महाराज जी ने इतना प्यार दिया और धन्य हैं वो पूज्य मामी जी जिनकी दोनों पक्ष की जमीन पर दो भव्य श्री रामशरणम् भवनों का निर्माण हुआ मनाली Log Huts 16 जून 1999 एवं शनाग 15 जून 1997।

मेरी बन गई बिगड़ी बात गुरु जी शुक्रराना
मुझे मिल गई सत्संग की सौगात गुरु जी शुक्रराना ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

मार्च से जून 2021

- **सूरत**, गुजरात में 25 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग के बाद 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रतनगढ़**, राजस्थान में 12 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी सत्संग के बाद 131 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में मार्च, अप्रैल में 25 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। ■



Online Programmes from 11 February 2021 to 31 May 2021

With the Grace of Param Pujniya Gurujans, Satsang continued using online platforms despite the Covid-19 situation. Daily Satsangs, from 7A.M. to 8 A.M. were attended by 3,600 sadhaks on average and Sunday Satsang from 9 A.M. to 10.30 A.M by 6060 on average. Sunderkand Path held on the 2nd of every month was attended by 5356 sadhaks.

Special programmes held online during these months consisted of: a special celebration held on 15 March 2021 on the occasion of the Avataram Divas of Param Pujniya Maharaj Ji. This consisted of Amritvani followed by Akhand Path of Ramayanji which concluded on 16 March. This celebration was attended by 9299 sadhaks. Another special celebration was held on the Avataram Divas of Param Pujniya Swami Ji Maharaj, held on 27 April 2021, which consisted of Amritvani and Pravachan in the morning from 7 A.M. to 8.15 A.M. and Bhajan Sandhya in the evening from 5 P.M. to 6 P.M. This program was attended by 8892 sadhaks. ■

Calendar

Poornima (July to October 2021)

July	24	Saturday	September	20	Monday
August	22	Sunday	October	20	Wednesday



यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org